सुसमाचार की पुस्तकों की एकसुरता

साल भर में पढ़े जाने के लिए समय-सारिणी

सप्ताह 1–विशेष: ''परमेश्वर का अपने पुत्र का दान''

सप्ताह 2

I. सेवकाई से पूर्व यीशु के जीवन का समय।

क. लूका की भूमिका और समर्पण। लूका 1:1–4.

ख. यूहन्ना का परिचय। यूहन्ना 1:1–18.

ग. मत्ती रचित सुसमाचार के अनुसार यीशु की वंशावली। मत्ती 1:1–17.

घ. लूका रचित सुसमाचार के अनुसार वंशावली। लूका 3:23–38.

ङ जकर्याह द्वारा यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के जन्म की घोषणा। लूका 1:5–25.

च. यीशु के जन्म की घोषणा। लूका 1:26–38.

छ. यीशु की होने वाली माता मरियम की यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले की माता इलिशबा से भेंट। लूका 1:39–56.

ज. यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले का जन्म और आरम्भिक जीवन। लूका 1:57–80.

सप्ताह 3

झ. यूसुफ के पास यीशु के जन्म की घोषणा। मत्ती 1:18–25.

ञ. यीशु का जन्म। लूका 2:1–7.

ट. स्वर्गदूतों द्वारा चरवाहों में यीशु के जन्म की घोषणा। लूका 2:8–20.

ठ. खतना, मन्दिर में सेवा, और यीशु का नामकरण। लूका 2:21–39.

ड. पूरब से आए पंडित यानी विद्वान, नवजन्मे राजा यीशु के दर्शन को आए। मत्ती 2:1–12.

ढ. मिस्र में जाना और बैतलहम में बाल संहार। मत्ती 2:13–18.

ण. बालक यीशु को मिस्र से नासरत में लाया गया। मत्ती 2:19–23; लूका 2:39.

त. यीशु का नासरत में रहने और बारह वर्ष की आयु में यरूशलेम जाना। लूका 2:40–52.

सप्ताह 4

II. यीशु के आगे आने वाले, यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले की सेवकाई का आरम्भ।

क. यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले का व्यक्तित्व और प्रचार।

मत्ती 3:1-12; मरकुस 1:1-8; लूका 3:1-18.

III. यीशु की सेवकाई का आरम्भ।

क. यीशु ने यरदन में यूहन्ना से बपतिस्मा लिया। मत्ती 3:13-17; मरकुस 1:9-11; लूका 3:21, 22.

ख. जंगल में यीशु की परीक्षा। मत्ती 4:1-11; मरकुस 1:12, 13; लूका 4:1-13.

ग. यूहन्ना द्वारा यीशु की पहली गवाही। यूहन्ना 1:19-34.

सप्ताह 5

घ. यीशु अपने आरम्भिक चेले बनाता है। यहून्ना 1:35-51.

ङ यीशु काना गलील में पहला आश्चर्यकर्म करता है। यूहन्ना 2:1-11.

च. कफ़रनहूम में यीशु का पहला ठिकाना। यूहन्ना 2:12.

IV. पहले से दूसरे फसह तक।

क. यीशु अपनी सेवकाई के पहले फसह में भाग लेता है।

1. यीशु मन्दिर को शुद्ध करता है। यूहन्ना 2:13-25.
2. यीशु निकुदेमुस से बात करता है। यूहन्ना 3:1-21.

ख. यहूदिया में पहली सेवकाई-यूहन्ना की दूसरी गवाही। यूहन्ना 3:22-36.

सप्ताह 6

ग. यीशु गलील जाने के लिए यहूदिया से निकलता है।

1. गलील को जाने के कारण। मत्ती 4:12; मरकुस 1:14; लूका 3:19, 20; यूहन्ना 4:1-4.
2. याकूब का कुआं और सूखार में पहुंचना। यूहन्ना 4:5-42.
3. गलील में पहुंचना। लूका 4:14; यूहन्ना 4:43-45.

घ. यीशु की शिक्षा का सामान्य विवरण। मत्ती 4:17; मरकुस 1:14, 15; लूका 4:14, 15.

ङ काना में दूसरा आश्चर्यकर्म। यूहन्ना 4:46-54.

च. कफ़रनहूम में यीशु का अस्थाई ठिकाना। मत्ती 4:13-16.

छ. यीशु चार मछुआरों को अपने पीछे चलने को कहता है। मत्ती 4:18-22; मरकुस 1:16-20; लूका 5:1-11.

सप्ताह 7-विशेष: यीशु के पीछे चलने और उसके चेले बनने की पुकार

सप्ताह 8

ज. आराधनालय में दुष्ट आत्मा से ग्रस्त व्यक्ति को अच्छा करना। मरकुस 1:21-28; लूका 4:31-37.

झ. पतरस की सास और दूसरों को अच्छा करना। मत्ती 8:14-17; मरकुस 1:29-34; लूका 4:38-41.

ञ. यीशु गलील में से प्रचार करते हुए जाता है। मत्ती 4:23-25; मरकुस 1:35-39; लूका 4:42-44.

ट. यीशु एक कोढ़ी को चंगा करता है और उत्तेजना उत्पन्न कर देता है।

मत्ती 8:2-4; मरकुस 1:40-45; लूका 5:12-16.

ठ. कफ़रनहूम में एक अधरंगी को चंगा करता है। मत्ती 9:2-8; मरकुस 2:1-12; लूका 5:17-26.

ड. मत्ती की बुलाहट। मत्ती 9:9; मरकुस 2:13, 14; लूका 5:27, 28.

सप्ताह 9

V. दूसरे से तीसरे फसह तक।

क. यीशु सब्त के दिन चंगा करता है और अपने काम का बचाव करता है। यूहन्ना 5:1-47.

ख. यीशु सब्त के दिन बालें तोड़ने वाले अपने चेलों का बचाव करता है। मत्ती 12:1-8; मरकुस 2:23-28; लूका 6:1-5.

ग. यीशु सब्त के दिन सूखे हाथ वाले को चंगा करने का उत्तर देता है। मत्ती 12:9-14; मरकुस 3:1-6; लूका 6:6-11.

घ. गलील की झील के किनारे यीशु कइयों को अच्छा करता है। मत्ती 12:13-21; मरकुस 3:7-12.

ङ यीशु प्रार्थना के बाद बारह प्रेरितों का चयन करता है। मत्ती 10:2-4; मरकुस 3:13-19; लूका 6:12-16.

सप्ताह 10

च. पहाड़ी उपदेश।

1. आरम्भिक बातें। मत्ती 5:1, 2; लूका 6:17-20.
2. धन्य वचन: मसीहा की लोगों के लिए प्रतिज्ञाएं। मत्ती 5:3-12; लूका 6:20-26.
3. मसीही लोगों के प्रभाव तथा कर्त्तव्य। मत्ती 5:13-16.
4. पुराने नियम और आधुनिक शिक्षा का मसीही शिक्षाओं से सम्बन्ध। मत्ती 5:17-48; लूका 6:27-30, 32-36.
5. दान देना, प्रार्थना करना और उपवास करना दिखावे के लिए नहीं, बल्कि सच्चे मन से होना चाहिए। मत्ती 6:1-18.

सप्ताह 11

6. संसार की चिंताओं का स्वर्गीय भण्डारों की सुरक्षा से अन्तर। मत्ती 6:19-34.
7. न्याय करने सम्बन्धी नियम। मत्ती 7:1-6; लूका 6:37-42.
8. प्रार्थना के बारे में शिक्षाएं । मत्ती 7:7-11.
9. सुनहरा नियम। मत्ती 7:12; लूका 6:31.
10. दो मार्ग और झूठे भविष्यवक्ता। मत्ती 7:13-23; लूका 6:43-45.
11. निष्कर्ष और प्रासंगिकता: दो मकान बनाने वाले। मत्ती 7:24-29; लूका 6:46-49.

सप्ताह 12

छ. सूबेदार के नौकर को चंगाई देना। मत्ती 8:1, 5-13; लूका 7:1-10.

ज. यीशु विधवा के पुत्र को जिलाता है। लूका 7:11-17.

झ. यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले का प्रश्न और उत्तर में यीशु का संदेश। मत्ती 11:2-30; लूका 17:18-35.

ञ. एक फरीसी के घर यीशु के पांवों पर तेल का अभिषेक। लूका 7:36-50.

सप्ताह 13-विशेष: ''अपनी भौतिक आवश्यकताओं के लिए परमेश्वर में भरोसा रखना सीखना''

सप्ताह 14

ट. गलील की अगली यात्राएं। लूका 8:1-3.

ठ. यहूदियों के परमेश्वर की निंदा करने के आरोप। मत्ती 12:22-37; मरकुस 3:19-30; लूका 11:14-23.

ड. चिह्न ढूंढ़ने वाले लोग और एक अति उत्साही स्त्री पर क्रोधित होना। मत्ती 12:38-50; लूका 11:24-36.

ढ. अपनी माता तथा भाइयों के विषय में मसीह की शिक्षा। मत्ती 12:46-50; मरकुस 3:31-35; लूका 8:19-21.

सप्ताह 15

ण. यीशु एक फरीसी के साथ खाना खाता है और उस सम्प्रदाय पर आरोप लगाता है। लूका 11:37-54.

त. कपट, संसार की चिन्ता, चौकस रहने और उस पर आने वाले दु:ख के विषय में शिक्षा। लूका 12:1-59.

थ. मन फिराने की आज्ञा। बे-फल अंजीर के वृक्ष का दृष्टांत। लूका 13:1-9.

सप्ताह 16

द. दृष्टांतों का पहला बड़ा समूह।

1. एक परिचय। मत्ती 13:1-3; मरकुस 4:1, 2; लूका 8:4.
2. बीज बोने वाले का दृष्टांत। मत्ती 13:3-23; मरकुस 4:3-25; लूका 8:5-18.
3. अपने आप उगने वाले बीज का दृष्टांत। मरकुस 4:26-29.
4. जंगली बीज का दृष्टांत। मत्ती 13:24-30.
5. राई के बीज और खमीर का दृष्टांत। मत्ती 13:31-35; मरकुस 4:30-34.
6. जंगली बीज के दृष्टांत की व्याख्या। मत्ती 13:36-43.
7. भण्डार, मोती और जाल के दृष्टांत की व्याख्या। मत्ती 13:44-53.

सप्ताह 17

ध. यीशु तूफ़ान को शांत करता है। मत्ती 8:18-27; मरकुस 4:35-41; लूका 8:22-25.

न. दुष्ट आत्मा से ग्रस्त दो गिरासेनियों को चंगा करना। मत्ती 8:28-34; 9:1; मरकुस 5:1-21; लूका 8:26-40.

प. मत्ती का भोज। उपवास पर संदेश। मत्ती 9:10-17; मरकुस 2:15-22; लूका 5:29-39.

सप्ताह 18

फ. याइर की बेटी और रोगी स्त्री। मत्ती 9:18-26; मरकुस 5:22-43; लूका 8:41-56.

ब. अन्धों और दुष्ट आत्मा से ग्रस्त एक गूंगे को चंगा करना। मत्ती 9:27-34.

भ. यीशु नासरत में जाता है और वहां ठुकराया जाता है। मत्ती 13:54-58; मरकुस 6:1-6; लूका 4:16-31.

सप्ताह 19-विशेष: ''हमारा खजाना कहां है?''

सप्ताह 20

म. गलील में तीसरी बार आना। बारह को आज्ञा देकर भेजना। मत्ती 9:35-38; 10:1, 5-42; 11:1; मरकुस 6:6-13; लूका 9:1-6.

य. हेरोदेस अंतिपास यीशु को यूहन्ना समझ लेता है। मत्ती 14:1-12; मरकुस 6:14-29; लूका 9:7-9.

र. हेरोदेस के इलाके में से पहली बार निकाले जाना और वापस आना।

1. बारह प्रेरितों का वापस आना और झील के पूर्वी तट की ओर जाना। मत्ती 14:13; मरकुस 6:30-32; लूका 9:10; यूहन्ना 6:1.

सप्ताह 21

2. पांच हज़ार को खिलाना। मत्ती 14:13-21; मरकुस 6:33-44; लूका 9:11-17; यूहन्ना 6:2-14.

3. बारह चेले नाव पर वापस आने की कोशिश करते हैं। यीशु पानी पर चलता है। मत्ती 14:22-36; मरकुस 6:45-56; यूहन्ना 6:15-21.

ल. आत्मिक भोजन और सचमुच प्रेरित बनना। पतरस का अंगीकार। यूहन्ना 6:22-71.

सप्ताह 22

VI. तीसरे फसह से बैतनिय्याह में यीशु के पहुंचने तक।

क. तीसरा फसह (कुछ लोगों का विचार है कि यीशु नहीं गया)। परम्परा का पालन न करने का फ़रीसी उस पर आरोप लगाते हैं। मत्ती 15:1-20; मरकुस 7:1-23; यूहन्ना 7:1.

ख. हेरोदेस के इलाके से दूसरी बार निकाला जाना। मत्ती 15:21; मरकुस 7:24.

ग. कनानी स्त्री की लड़की को चंगा करना। मत्ती 15:22-28; मरकुस 7:25-30.

घ. यीशु फिर हेरोदेस के इलाके में जाने से बचता है। मत्ती 15:29; मरकुस 7:31.

ङ एक बहरे को चंगा करना और चार हज़ार को खिलाना। मत्ती 15:30-38; मरकुस 7:32-8:9.

सप्ताह 23

च. हेरोदेस के इलाके से तीसरी बार निकाला जाना।

1. फ़रीसियों का खमीर। एक अन्धे को चंगा करना। मत्ती 15:39-16:12; मरकुस 8:10-26.

2. पतरस का बड़ा अंगीकार। मत्ती 16:13-20; मरकुस 8:27-30; लूका 9:18-21.

3. दु:ख भोगने की भविष्यवाणी। पतरस को डांटना। मत्ती 16:21-28; मरकुस 8:31-39; 9:1; लूका 9:22-27.

4. रूपान्तर। एलिय्याह के सम्बन्ध में। मत्ती 17:1-13; मरकुस 9:2-13; लूका 9:28-36.

सप्ताह 24

5. दुष्टात्मा से ग्रस्त लड़के को चंगा करना। मत्ती 17:14-20; मरकुस 9:14-29; लूका 9:37-43.

6. गलील में वापस। दु:ख भोगने की भविष्यवाणी। मत्ती 17:21-23; मरकुस 9:30-32; लूका 9:43-45.

छ. यीशु कर्ज चुकाता है। मत्ती 17:24-27.

ज. झूठी अभिलाषा बनाम बच्चों जैसे बनना। मत्ती 18:1-14; मरकुस 9:33-50; लूका 9:46-50.

सप्ताह 25-विशेष: ''मसीही का सरकार से सम्बन्ध''

सप्ताह 26

झ. भाइयों के बीच पाप और क्षमा। मत्ती 18:15-35.

ञ. यीशु के भाइयों ने यहूदिया में जाने की सलाह दी। यूहन्ना 7:2-9.

ट. यरूशलेम का निजी दौरा। लूका 9:51-56; यहून्ना 7:10.

ठ. मसीह की सेवा के लिए बलिदान के सम्बन्ध में। लूका 9:57-62.

ड. मन्दिर में डेरों के पर्व के दौरान। यूहन्ना 7:11-52.

ढ. व्यभिचार करती पकड़ी गई स्त्री। यूहन्ना 7:53-8:11.

सप्ताह 27

त. मसीहा होने के दावों के कारण यीशु को पथराव करने की कोशिश। यूहन्ना 8:12-59.

थ. जन्म से अन्धे के कारण झगड़ा। यूहन्ना 9:1-41.

द. अच्छा चरवाहा पर संदेश। यूहन्ना 10:1-21.

सप्ताह 28

ध. सत्तर का मिशन और वापस आना। लूका 10:1-24.

न. धन्य सामरी का दृष्टांत। लूका 10:25-37.

प. यीशु, मारथा और मरियम का मेहमान। लूका 10:38-42.

फ. प्रार्थना करना सिखाया और प्रार्थना करने के लिए उत्साहित किया। लूका 11:1-13.

ब. सब्त के दिन चंगाई। राई का बीज और ख़मीर। लूका 13:10-21.

भ. समर्पण का पर्व। यहूदी यीशु को पथराव करने की कोशिश करते हैं और वह पिरिया को चला जाता है। यूहन्ना 10:22-42.

म. तंग फाटक, हेरोदेस के विरुद्ध चेतावनी। लूका 13:22-35.

सप्ताह 29

य. एक फरीसी के साथ खाना। सबत के दिन चंगाई और इस घटना से तीन सबक। लूका 14:1-24.

र. चेले बनने का खर्च पहले जोड़ लेना आवश्यक है। लूका 14:25-35.

क. दृष्टांतों का दूसरा बड़ा समूह।

1. परिचय। लूका 15:1, 2.

2. खोई हुई भेड़ का दृष्टांत। लूका 15:3-7.

3. खोए सिक्कों का दृष्टांत। लूका 15:8-10.

4. खोए हुए पुत्र का दृष्टांत। लूका 15:11-32.

5. अधर्मी भण्डारी का दृष्टांत। लूका 16:1-18.

6. धनवान और लाज़र। लूका 16:19-31.

सप्ताह 30

7. अपराध, विश्वास और सेवा के विषय में। लूका 17:1-10.

व. पिरिया से बैतनिय्याह में। लाज़र को जिलाना। यूहन्ना 11:1-46.

ह. आराधनालय का फ़रमान। यीशु चला जाता है। यूहन्ना 11:47-54.

स. यरूशलेम को जाना। दस कोढ़ी। राज्य के विषय में। लूका 17:11-37.

श. हठी विधवा का दृष्टांत। लूका 18:1-8.

ष. फरीसी और महसूल लेने वाले का दृष्टांत। लूका 18:9-14.

सप्ताह 31-विशेष: ''धन के खतरे''

सप्ताह 32

त्र. यरूशलेम को जाना। तलाक के विषय में। मत्ती 19:1-12; मरकुस 10:1-12.

कक. बच्चों को आशीर्वाद देना। बच्चों जैसे बनने के विषय में। मत्ती 19:13-15; मरकुस 10:13-16; मरकुस 18:15-17.

खख. धनवान हाकिम। धन की हानियां। बलिदान का प्रतिफल। दाख की बारी में काम करने वाले मज़दूरों का दृष्टांत। मत्ती 19:16-20:16; मरकुस 10:17-31; लूका 18:18-30.

सप्ताह 33

गग. अपने दुख भोगने की भविष्यवाणी। अभिलाषा को डांटना। मत्ती 20:17-28; मरकुस 10:32-45; लूका 18:31-34.

घघ. बर्तिमई और उसके साथी को चंगाई दी गई। मत्ती 20:29-34; मरकुस 10:46-52; लूका 18:35-43.

ङङ. जक्कई। सिक्कों का दृष्टांत। यीशु का यरूशलेम में जाना। लूका 19:1-28.

सप्ताह 34

VII. यीशु की सेवकाई का अन्तिम सप्ताह, चौथा फसह और क्रूस दिया जाना।

क. यीशु बैतनिय्याह में पहुंचता है और वहां उसकी दावत होती है।
(शुक्रवार दोपहर से शनिवार रात तक [मार्च 31 से अप्रैल 1, 30 ई. ?])
मत्ती 26:6-13; मरकुस 14:3-9; यूहन्ना 11:55-57; 12:1-11.

ख. यरूशलेम में यीशु का विजयी प्रवेश। (बैतलहम से यरूशेलम और
वापसी-रविवार [अप्रैल 2, 30 ई. ?]) मत्ती 21:1-12, 14-17;
मरकुस 11:1-11; लूका 19:29-44; यूहन्ना 12:12-19.

ग. अंजीर का फल रहित पेड़। मन्दिर को शुद्ध किया गया। (बैतनिय्याह से
यरूशलेम का रास्ता-सोमवार) मत्ती 21:18, 19, 12, 13; मरकुस 11:12-18;
लूका 19:45-48.

घ. अंजीर का पेड़ सूखा मिलना। (बैतनिय्याह से यरूशलेम का रास्ता)
मत्ती 21:20-22; मरकुस 11:19-26; लूका 21:37, 38.

सप्ताह 35 ———————————————————

ङ. इन प्रश्नों के उत्तर में, कि वह किस अधिकार से काम करता है,
यीशु दृष्टांतों का तीसरा बड़ा समूह बताता है। (मन्दिर के प्रांगण में-मंगलवार)
1. एक परिचय। मत्ती 21:23-27; मरकुस 11:27-33; लूका 20:1-8.
2. दो पुत्रों का दृष्टांत। मत्ती 21:28-32.
3. दुष्ट किसान का दृष्टांत। मत्ती 21:33-46; मरकुस 12:1-12; लूका 20:9-19.
4. राजा के पुत्र के विवाह का दृष्टांत। मत्ती 22:1-14.

च. यहूदी अधिकारी यीशु को फंसाने के चक्कर में हैं। (मन्दिर का प्रांगण-मंगलवार)
1. फरीसी और हेरोदेसी कर देने के विषय में पूछते हैं। मत्ती 22:15-22;
मरकुस 12:13-17; लूका 20:20-26.

सप्ताह 36 ———————————————————

2. सदूकी जी उठने के विषय में पूछते हैं। मत्ती 22:23-33; मरकुस 12:18-27;
लूका 20:27-39.
3. व्यवस्था का एक सिखाने वाला सबसे बड़ी आज्ञा के बारे में पूछता है।
मत्ती 22:34-40; मरकुस 12:28-34; लूका 20:40.
4. यीशु का प्रश्न जिसका किसी के पास उत्तर नहीं था। मत्ती 22:41-46;
मरकुस 12:35-37; लूका 20:41-44.

छ. यीशु का लोगों को अन्तिम संदेश। उसका शास्त्रियों और फ़रीसियों की निंदा
करना। (मन्दिर के प्रांगण में-मंगलवार) मत्ती 23:1-39; मरकुस 12:38-40;
लूका 20:45-47.

सप्ताह 37-विशेष: ''हमारे दान को देखकर यीशु क्या देखता है?''

सप्ताह 38 और 39 ———————————————————

ज. दान देते देखना और विधवा का सिक्का। (मन्दिर के भण्डार में-मंगलवार)
मरकुस 12:41-44; लूका 21:1-4.

झ. कुछ यूनानी यीशु को मिलने आते हैं। वह पहले ही बता देता है कि वह सभी लोगों

को अपनी तरफ खींचेगा। (मन्दिर के प्रांगण में-मंगलवार) यूहन्ना 12:20-50.

ञ. यरूशलेम के विनाश की भविष्यवाणी। मत्ती 24:11-35; मरकुस 13:1-31; लूका 21:5-33.

ट. मसीह का द्वितीय आगमन। मत्ती 24:36-51; मरकुस 13:32-37; लूका 21:34-37.

सप्ताह 40

ठ. हमारे प्रभु के संदेश का निष्कर्ष। कुंवारियों और तोड़ों का दृष्टांत। अन्तिम न्याय। (जैतून पहाड़ [?]-मंगलवार) मत्ती 25:1-46.

ड यीशु अधिकारियों के षड्यन्त्र की भविष्यवाणी और यहूदा द्वारा उसे मरवाने का सौदा करता है। (जैतून पहाड़, बैतनिय्याह और यरूशलेम-मंगलवार सूर्यास्त, जिसे यहूदी लोग बुधवार का आरम्भ मानते हैं) मत्ती 26:1-5, 14-16; मरकुस 14:1, 2, 10, 11; लूका 22:1-6.

ढ. फसह की तैयारी। चेले पद के लिए झगड़ते हैं। (बैतनिय्याह से यरूशलेम-गुरुवार दोपहर [और सूर्यास्त के बाद] शुक्रवार का आरम्भ) मत्ती 26:17-20; मरकुस 14:12-17; लूका 22:7-18, 24-30.

सप्ताह 41

ण. फसह के पर्व पर यीशु चेलों के पांवों को धोता है। (यरूशलेम-गुरुवार शाम, तथा शुक्रवार का आरम्भ) यूहन्ना 13:1-20.

त. यहूदा द्वारा पकड़वाया जाना और पतरस के इनकार की भविष्यवाणी। (यरूशलेम-क्रूस दिए जाने से पहले की शाम) मत्ती 26:21-25, 31-35; मरकुस 14:18-21, 27-31; लूका 22:21-23, 31-38; यूहन्ना 13:21-38.

थ. प्रभु-भोज का आरम्भ। (यरूशलेम-क्रूस दिए जाने से पहले की शाम) मत्ती 26:26-29; मरकुस 14:22-25; लूका 22:19, 20; 1 कुरिन्थियों 11:23-26.

सप्ताह 42

द. अपने चेलों को विदाई संदेश। (यरूशलेम-क्रूस दिए जाने से पहले की शाम) यूहन्ना 14-16.

ध. प्रभु की प्रार्थना। (यरूशलेम-क्रूस दिए जाने से पहले की शाम) यूहन्ना 17.

सप्ताह 43-विशेष: ''यीशु ने हमारे लिए क्या किया''

सप्ताह 44

न. गतसमनी में जाना और वहां यीशु का परेशान होना। (किद्रोन के नाले और जैतून पहाड़ में एक बाग-गुरुवार देर रात तथा शुक्रवार सुबह के बीच) मत्ती 26:30, 36-46; मरकुस 14:26, 32-42; लूका 22:39-46; यूहन्ना 18:1.

प. यीशु के साथ विश्वासघात, गिरफ्तारी और त्यागा जाना। (गतसमनी-सूर्योदय से पहले शुक्रवार) मत्ती 26:47-56; मरकुस 14:43-52; लूका 22:47-53; यूहन्ना 8:2-11.

फ. यहूदी मुकदमे का पहला चरण। अन्नास द्वारा पूछताछ। (यरूशलेम-सूर्योदय से

पहले शुक्रवार) यहून्ना 18:12-14, 19-23.

ब. यहूदी मुकदमे का दूसरा चरण। यीशु को कायफा और महासभा के दोषी ठहराए जाना। (यरूशलेम, कैफ़ा का महल-शुक्रवार प्रात: से पहले) मत्ती 26:57, 59-68; मरकुस 14:53, 55-65; लूका 22:54, 63-65; यूहन्ना 18:24.

सप्ताह 45

भ. पतरस तीन बार यीशु का इनकार करता है। (यरूशलेम, प्रधान याजक के निवास का प्रांगण-प्रात: से पहले और लगभग प्रात: शुक्रवार) मत्ती 26:58, 69-75; मरकुस 14:54, 66-72; लूका 22:54-62; यूहन्ना 18:15-18, 25-27.

म. यहूदी मुकदमे का तीसरा चरण, महासभा द्वारा औपचारिक तौर पर यीशु को दोषी ठहराया गया और पिलातुस के पास लाया गया। (यरूशलेम-शुक्रवार प्रात) मत्ती 27:1, 2; मरकुस 15:1; लूका 22:66-23:1; यूहन्ना 18:28.

य. रोमी मुकदमे का पहला चरण। यीशु पिलातुस के सामने पहली बार। (यरूशलेम-शुक्रवार भोर) मत्ती 27:11-14; लूका 15:2-5; 23:2-5; यूहन्ना 18:28-38.

र. रोमी मुकदमे का दूसरा चरण। यीशु हेरोदेस अंतिपास के सामने। (यरूशलेम-शुक्रवार भोर) लूका 23:6-12.

ल. रोमी मुकदमे का तीसरा चरण। पिलातुस न चाहते हुए भी यीशु को क्रूस का दण्ड देता है। (शुक्रवार-सूर्योदय के समय) मत्ती 27:15-30; मरकुस 15:6-19; लूका 23:13-25; यूहन्ना 18:39-19:16.

सप्ताह 46

व. यहूदा का पछतावा और फंदा लगाना। (मन्दिर में और यरूशलेम की शहरपनाह से बाहर-शुक्रवार सुबह) मत्ती 27:3-10; प्रेरितों 1:18, 19.

स. क्रूस दिया जाना।

1. क्रूस के मार्ग में। (यरूशलेम के अंदर और बाहर-शुक्रवार सुबह) मत्ती 27:31-34; मरकुस 15:20-23; लूका 23:26-33; यूहन्ना 19:17.
2. यीशु को क्रूस पर चढ़ाया गया और ताने मारे गए। पहले तीन घण्टे के दौरान उसके तीन वचन। (शुक्रवार सुबह नौ बजे से दोपहर तक) मत्ती 27:35-44; मरकुस 15:24-32; लूका 23:33-43; यूहन्ना 19:18-27.
3. तीन घण्टे तक अन्धेरा। चार और वचन कहने के बाद, यीशु की मृत्यु हो जाती है। उसकी मृत्यु के समय होने वाली अद्‌भुत घटनाएं। (शुक्रवार दोपहर से तीन बजे बाद दोपहर तक) मत्ती 27:45-56; मरकुस 15:33-41; लूका 23:44-49; यूहन्ना 19:28-30.

सप्ताह 47

4. यीशु मरा हुआ पाया गया। उसकी लाश कब्र में दफ़ना कर पहरेदार बिठा दिए गए। (शुक्रवार बाद दोपहर-सूर्यास्त [6 बजे के लगभग] तक) मत्ती 27:57-66; मरकुस 14:42-47; लूका 23:50-56; यूहन्ना 19:31-42.

VIII. यीशु का जी उठना, दर्शन देना और ऊपर उठा लिया जाना। (यहूदिया और गलील,

बसंत ऋतु के चालीस दिन [30 ई. ?])

क. स्वर्गदूतों ने कुछ स्त्रियों को यीशु के जी उठने के बारे में बताया। पतरस और यूहन्ना खाली कब्र देखने अन्दर गए। (यूसुफ का बाग–रविवार भोर) मत्ती 28:1–8; मरकुस 16:1–8; लूका 24:1–8, 12; यूहन्ना 20:1–10.

ख. जी उठे मसीह का पहली और दूसरी बार दर्शन देना। जी उठने के बारे में प्रेरितों को बताया जाता है। (यरूशलेम–रविवार प्रात:) मत्ती 28:9, 10; मरकुस 16:9–11; लूका 24:9–11, यूहन्ना 20:11–18.

ग. कुछ पहरेदार यहूदी हाकिमों को सूचना देते हैं। मत्ती 28:11–15.

घ. यीशु का तीसरी और चौथी बार दर्शन देना। (रविवार बाद दोपहर) मरकुस 16:12, 13; लूका 24:13–35; 1 कुरिन्थियों 15:5.

सप्ताह 48

ङ यीशु का पांचवीं बार दर्शन देना। (यरूशलेम–रविवार शाम) मरकुस 16:14; लूका 24:36–43; यहून्ना 20:19–25.

च. यीशु का छठी बार दर्शन देना। (रविवार, अपने जी उठने से एक सप्ताह बाद) यहून्ना 20:26–31; 1 कुरिन्थियों 15:5.

छ. यीशु का सातवीं बार दर्शन देना। (गलील की झील) यूहन्ना 21:1–25.

ज. यीशु का आठवीं बार दर्शन देना। (गलील का एक पहाड़) मत्ती 28:16, 17; 1 कुरिन्थियों 15:6.

झ. ग्रेट कमीशन दिया गया। (समय और स्थान यीशु के आठवें दर्शन वाले ही हैं) मत्ती 28:18–20; मरकुस 16:15–18; लूका 24:46, 47.

ञ. यीशु का नौवीं और दसवीं बार दर्शन देना। (यरूशलेम) लूका 24:44–49; प्रेरितों 1:3–8; 1 कुरिन्थियों 15:7.

ट. ऊपर उठाया जाना। (जैतून पहाड़, यरूशलेम और बैतनिय्याह के बीच) मरकुस 16:19, 20; लूका 24:50–53; प्रेरितों 1:9–12.

ठ. यीशु ऊपर उठाए जाने के बाद (पौलुस को) दर्शन देता है। 1 कुरिन्थियों 15:8; प्रेरितों 20:35 भी देखें।